

भगत नामदेव – सबद ५२
सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥
रागु बसंतु, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११९६

सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥
पीछै तिनका लै करि हाँकती ॥ १ ॥
जैसे पनकत थ्रूटि टि हाँकती ॥
सरि धोवन चाली लाडुली ॥ १ ॥ रहाउ ॥
धोबी धोवै बिरह बिराता ॥
हरि चरन मेरा मनु राता ॥ २ ॥
भणति नामदेउ रमि रहिआ ॥
अपने भगत पर करि दइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

सार: संतुलन, मन की हलचल के बीच भी शांत माध्यम की तरह काम करता है जो आंतरिक ठहराव बनाए रखते हुए परिवर्तन में मदद करता है। मन सदा गतिशील रहता है, यह शायद ही कभी स्थिर रहता है फिर भी विरोध करने के बजाय खुलेपन और स्वीकार्यता से यह अपने केंद्र में बना रह सकता है। हर कदम स्पष्टता, धैर्य और स्वाभाविक संतुलन की भावना से निर्देशित होता है। जब यह परिवर्तन आता है तब विकास बिना किसी बल या अंदरूनी संघर्ष के स्वाभाविक रूप से होता है। गति और ठहराव, एक-दूसरे के विरोधी नहीं रह जाते बल्कि वह तालमेल के साथ एक-दूसरे के साथ बहते हैं।

सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥

सहज भाव से, सबसे पहले धूल से ढकी एक गाड़ी आगे बढ़ती है। यह बताता है कि आंतरिक स्थिरता को खोए बिना, संतुलन ही आंतरिक गति का माध्यम बनता है।

पीछे तिनका लै करि हाँकती ॥ १ ॥

उसके पीछे, यह तिनके लेकर उन्हें आगे बढ़ाती है। यह शांति के सकारात्मक प्रभाव की ओर इशारा करता है जिसमें परिवर्तन बल के बजाय सहजता से आगे बढ़ता है। (१)

जैसे पनकत थूटि हाँकती ॥

जैसे सूखी गोबर की टिकिया, कीड़ों को दूर भगा देती है। यह दर्शाता है कि कैसे बदली हुई आंतरिक अवस्था स्वाभाविक रूप से हानिकारक आदतों को दूर कर देती है।

सरि धोवन चाली लाडली ॥ १ ॥ रहाउ ॥

लाडली प्रियतमा, तालाब पर बाल धोने जाती है। यह ज्ञान के सरोवर में लाडली यानी बहुत ज़्यादा लाड़-प्यार में पली और पुरानी आदतों में जकड़ी हुई बुद्धि को शुद्ध करने के इरादे को दर्शाता है। (१)(विराम)

धोबी धोवै बिरह बिराता ॥

धोबी बिना किसी मोह-माया के पूरी लगन से कपड़े धोता है, फिर भी सत्यनिष्ठा बनाए रखता है। यह दुनियादारी के कामों को बिना किसी बंधन के पूरी ईमानदारी से करने का संकेत देता है।

हरि चरन मेरा मनु राता ॥ २ ॥

मेरा मन सर्वव्यापी चेतना के विनम्र भाव में लीन है। यह सृष्टि की एकता में पूरी तरह डूबने को दर्शाता है। (२)

भणति नामदेउ रमि रहिआ ॥

नामदेव कहते हैं कि सार्वभौमिक चेतना प्रत्येक वस्तु में व्याप्त है। इससे पता चलता है कि पूरी दुनिया और उसकी गतिविधियाँ चेतना के एक ही निरंतर दायरे में घटित होती हैं।

अपने भगत पर करि दइआ ॥३॥३॥

वह अपने साथ जुड़े भक्त पर दया दिखाता है। यह पुष्टि करता है कि सर्वव्यापी ऊर्जा स्वाभाविक रूप से अपने उस हिस्से की ओर बहती है जो उससे जुड़ना चाहता है। (३)(३)

तत्त्व: भगत नामदेव बताते हैं कि अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरी निष्ठा से निभाने से सत्यनिष्ठा और जवाबदेही आती है। नतीजों की चिंता किए बिना अपने काम में पूरी तरह से शामिल होकर, हम सफलता और असफलता दोनों को संतुलन के साथ अपना सकते हैं। अलगाव का मतलब बेपरवाही या पीछे हटना नहीं है बल्कि हानिकारक आदतों का आकर्षण इसलिए कम हो जाता है क्योंकि उन्हें बढ़ावा देने वाली वस्तु, जैसे स्वामित्व की इच्छा, प्रशंसा की लालसा और अपेक्षाएँ, धीरे-धीरे क्षीण हो जाती हैं। मानसिकता में यह परिवर्तन हमारे संबंधों और कर्मों को जागरूकता की अभिव्यक्ति में बदल देता है तथा व्यक्तिगत विकास को संभव बनाता है और हम उन पुरानी आदतों से मुक्त हो जाते हैं जिन्होंने कभी हमें सीमित कर रखा था।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com